एकलव्य

मैं तो बिल्ली हूँ!

कहानीः रिनचिन

चित्रः जितेन्द्र ठाकुर

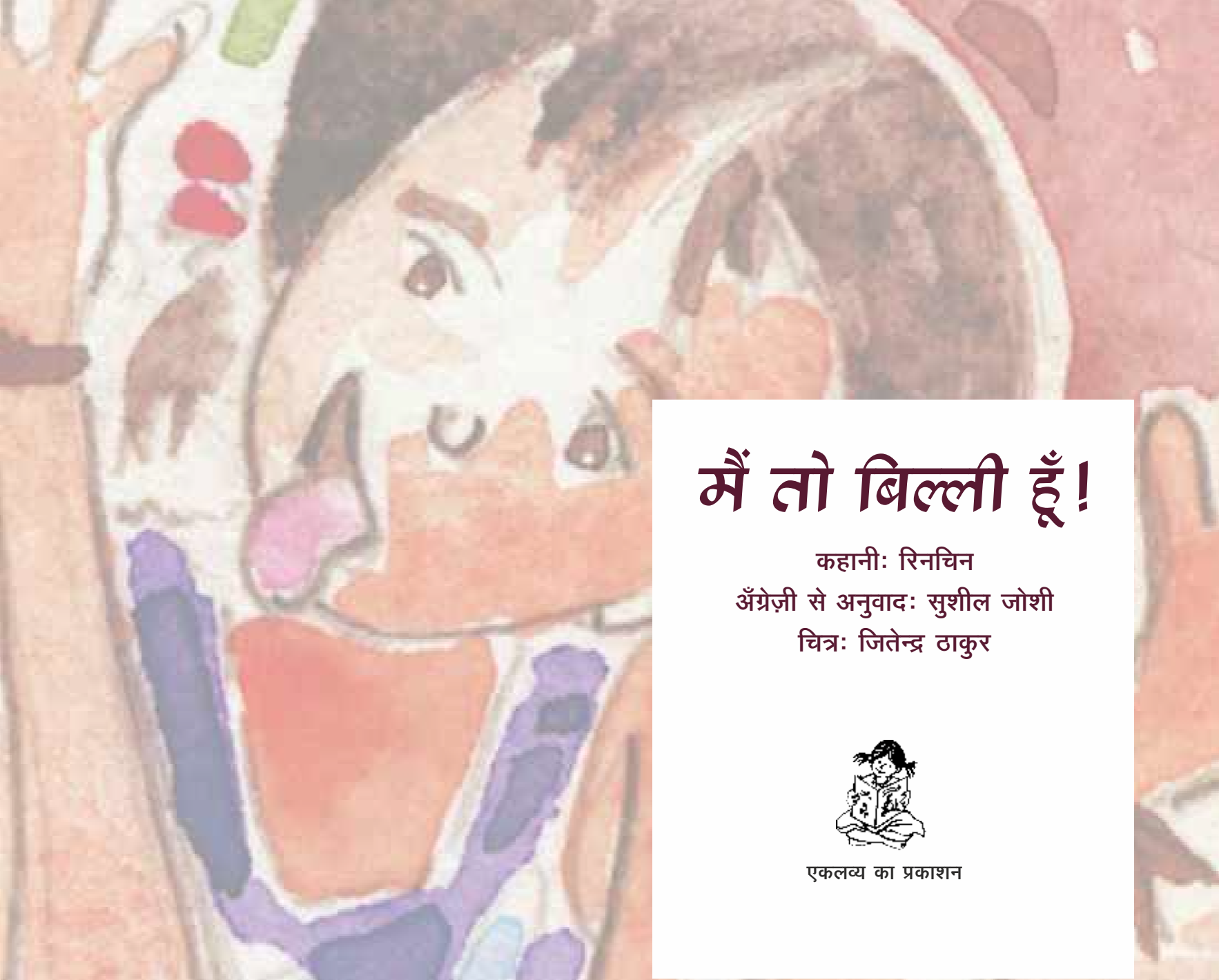

मैं तो बिल्ली हूँ!

कहानीः रिनचिन

अँग्रेज़ी से अनुवादः सुशील जोशी

चित्रः जितेन्द्र ठाकुर

एकलव्य का प्रकाशन

टिंटी ने आँखें खोलकर पन्नी में से
आसमान को निहारा।

अपनी माँ की ओर सरकते हुए
उसने कहा, मैं तो बिल्ली हूँ!

नहीं, तुम बिल्ली नहीं!
तुम मेरी नन्ही-सी बेटी हो,
माँ ने उसको गुदगुदी करते हुए कहा।

टिंटी छटपटाकर दूर सरकने लगी।
सरकते-सरकते बोली,

नहीं, मैं तो बिल्ली हूँ!

टिंटी जाओ, जाकर मुँह धो लो।
मैं नहीं धो सकती।

क्यों?

मैं तो बिल्ली हूँ!

तो चाट-चाटकर मुँह और बदन चमकाओ!
बिल्लियाँ यही तो करती हैं।

टिंटी ने चाटा,
मुँह में आया
नमक और धूल का स्वाद।

उफ... नहीं कर सकती।

तो तुम सिर्फ तीन पाव बिल्ली हो।

ऊँ...ह! टिंटी ने कहा और दूर सरक गई।

टिंटी जाओ, छोटी को आजी के
घर छोड़ आओ।

नहीं!

क्यों?

मैं तो बिल्ली हूँ!

तो उसे अपने मुँह से उठाओ!
बिल्लियाँ यही तो करती हैं।

टिंटी ने कोशिश की,
तो निकम चीख पड़ी
और उसे नोचने को हो गई तैयार।

उफ... नहीं कर सकती।

तो तुम सिर्फ आधी बिल्ली हो।

ऊँ...ह! कहकर टिंटी वहाँ से भाग ली।

टिंटी चलो, कचरा बीनने चलो। देर हो रही है।

मैं नहीं चल सकती।

क्यों?

मैं तो बिल्ली हूँ!

तो जाओ चूहे मारो, मेंढक मारो।
बिल्लियाँ यही तो करती हैं।

टिंटी ने भागदौड़ की मगर कोई हाथ नहीं आया।
चूहे बहुत फुर्तीले होते हैं!

उफ... नहीं पकड़ सकती।

तो तुम सिर्फ एक पाव बिल्ली हो।

ऊँ...ह! कहकर टिंटी दूर हट गई।

सब लोग काम पर चले गए।
टिंटी दिन भर बस्ती में
भटकती रही।

वह आजी के घर गई
और एक रोटी लेना चाही।

हट! जा भाग!
अपना खाना खुद ढूँढ, चोर बिल्ली।

ऊँ...ह! कहकर टिंटी
भूखी ही भाग खड़ी हुई।

फिर जब बच्चे लौटे...

टिंटी, चलो खेलें!

नहीं...

पर फिर उसने सोचा...
बिल्लियाँ खेल तो सकती हैं।

रुको,
मैं आऽऽऽ... रहीऽऽ... हूँऽऽऽऽऽ...
और टिंटी खेलने को दौड़ी।

शाम ढले जब माँ लौटी
तो टिंटी राह देख रही थी।

माँ जब रोटी बनाने बैठी तो टिंटी ने कहा,
मुझे रोटी दे दो।

नहीं!

क्यों?

क्योंकि तुम तो बिल्ली हो!

मरे चूहे खाओ!
बिल्लियाँ यही तो करती हैं।

उफ... मैं नहीं कर सकती, टिंटी ने
मुँह बनाया।

तो फिर तुम...?

ज़ीरो बिल्ली हूँ! टिंटी चहकी।
मैं बिल्ली हूँ ही नहीं!
मैं तो तुम्हारी बेटी हूँ... टिंटी!

कहते हुए वह माँ से लिपट गई।
और एक रोटी
चार निवालों में गप कर गई,
एकदम बिल्ली की तरह!

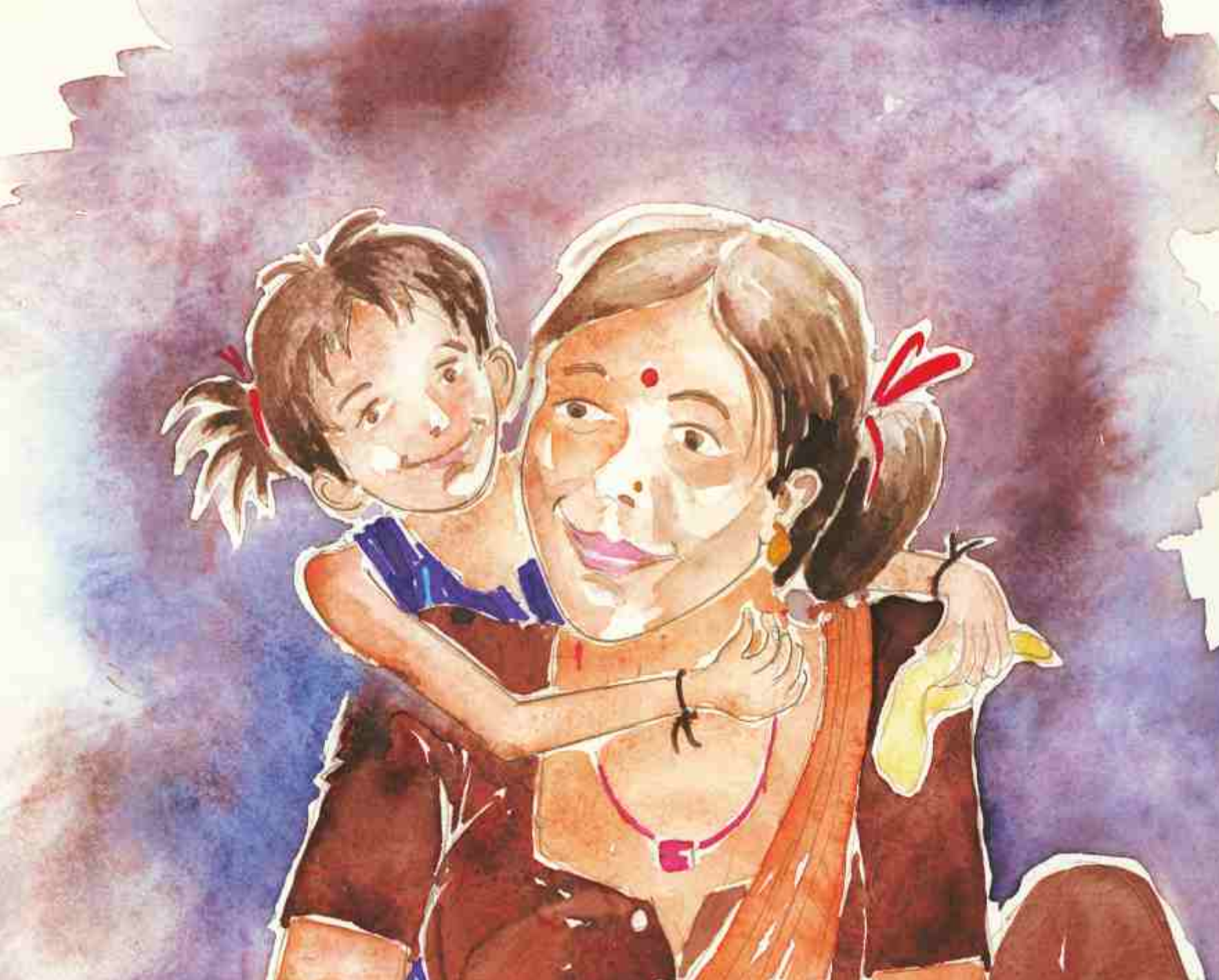

I am a cat!

Tinti opened her eyes,
looked at the sky through the
plastic sheet.

I am a cat, she said
crawling to her mother.

No, you are not!
You are my little girl,
said her mother tickling her.

No, I am a cat! she said wriggling
away.

Tinti, go and wash your face.

I can't.

Why?

I am a cat!

Then lick your face and body clean!
That's what cats do.

Tinti tried licking, but her hand
tasted of salt and dust.

Oonh... I can't.

Then you are only 3/4th a cat.

Unh! said Tinti and crawled away.

Tinti, go leave the baby at Ajji's house.

No!

Why?

I am a cat!

Then carry her in your mouth!
That's how cats do.

Tinti tried, but
Nikam howled in her face,
and tried to scratch her.

Oonh... I can't.

Then you are only half a cat.

Unh! said Tinti and crawled away.

Tinti come rag picking.
It's getting late.

I can't.

Why?

I am a cat!

Then hunt mice and frogs and what not.
That's what cats do.

Tinti tried, but she couldn't catch a thing. Mice were too clever!

Oonh... I can't.

Then you are only 1/4th a cat.

Unh! said Tinti and crawled away.

The whole day Tinti roamed the basti when the others were away.

She went into Ajji's house and tried to take a roti.

Humph! Run away! Go find your own food, you thief cat!

Unh! said Tinti
and ran away hungry.

When the children came back...
Tinti, come and play!

No...

But then she thought...
Cats can play!

Wait, I am co...miiii....ing...
And Tinti ran to play.

In the evening Tinti was waiting when her mother came back.

Give me roti she said, as her mother sat to make them.

No!

Why?

Because you are a cat!
Eat dead mice, like cats do.

Unnh! I can't, whined Tinti making a face.

Then you are...?

Zero cat! shouted Tinti.
I am not a cat at all!
I am your little girl...Tinti!

She ran and hugged her mother.
And ate the roti in four gulps.
Just like a cat!

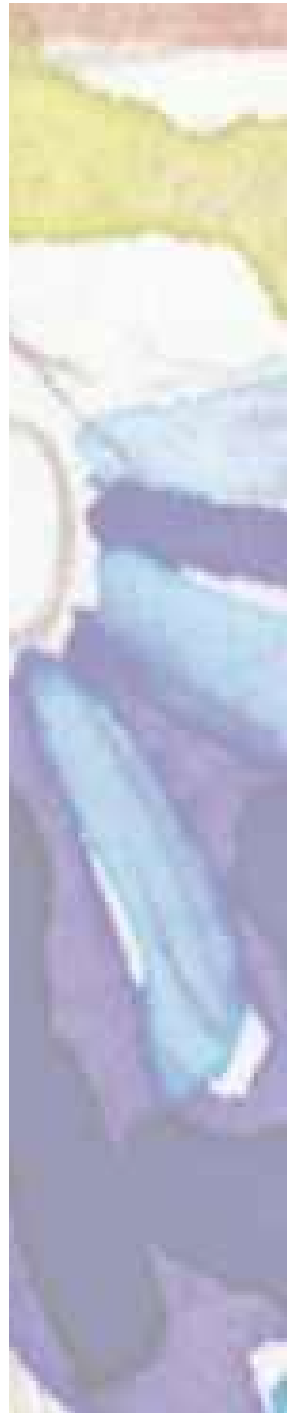

मैं तो बिल्ली हूँ!

MAIN TO BILLI HOON!

कहानीः रिनचिन
चित्रांकनः जितेन्द्र ठाकुर
मूल अँग्रेज़ी कहानी I AM A CAT! का हिन्दी अनुवादः सुशील जोशी

© रिनचिन व एकलव्य / जनवरी 2010 / 7000 प्रतियाँ
इस किताब की सामग्री का गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों के लिए इसी प्रकार के कॉपीलेफ्ट चिन्ह के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में इस किताब का ज़िक्र अवश्य करें तथा एकलव्य को सूचित करें। किसी भी अन्य प्रकार के उपयोग की अनुमति के लिए एकलव्य के ज़रिए लेखक से सम्पर्क करें।

पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो व 170 gsm आर्ट कार्ड (कवर)
यह किताब अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध है
ISBN: 978-81-89976-66-8
मूल्यः 24.00 रुपए

प्रकाशकः
एकलव्य
ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017
फैक्सः (0755) 255 1108
www.eklavya.in
सम्पादकीयः books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

मुद्रकः आर. के. सिक्युप्रिंट प्रा. लि., भोपाल, फोनः (0755) 268 7589

रिनचिन भोपाल में रहती और काम करती हैं। उन्हें कहानियाँ बहुत पसन्द हैं और वे अपने आस-पास की दुनिया के बारे में लिखती हैं।

जितेन्द्र ठाकुर भोपाल में रहते हैं व एकलव्य में कार्यरत हैं। उन्हें बच्चों के लिए चित्रकारी करना बहुत प्रिय है। वे प्रकृति के सौन्दर्य को अपने रंगों के ज़रिए महसूस करने का प्रयास करते हैं।

टिंटी सोचती है कि वह एक बिल्ली है।

पर उसकी माँ कहती है कि वह उसकी नन्ही-सी बेटी है।

टिंटी है कौन?

कहानी पढ़ो और खुद पता लगाओ...

ISBN: 9788189976668

एकलव्य

parag

मूल्य: 24.00 रुपए

A0115H